**Durga Chalisa Lyrics - दुर्गा चालीसा लिरिक्स,नमो नमो दुर्गे सुख करनी नमो नमो अंबे दुःख हरनी।**

**।। दोहा।।**

**या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।  
नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।**

**।। चौपाई।।**

**नमो नमो दुर्गे सुख करनी।  
नमो नमो अंबे दुःख हरनी।।  
निराकार है ज्योति तुम्हारी ।  
तिहूं लोक फैली उजियारी।।**

**शशि ललाट मुख महा विशाला।  
 नेत्र लाल भृकुटी विकराला ।।  
रूप मातुको अधिक सुहावे।   
 दरश करत जन अति सुख पावे ।।**

**तुम संसार शक्ति मय कीना ।  
 पालन हेतु अन्न धन दीना ।।  
अन्नपूरना हुई जग पाला ।  
तुम ही आदि सुंदरी बाला ।।**

**प्रलयकाल सब नासन हारी।  
 तुम गौरी शिव शंकर प्यारी ।।  
शिव योगी तुम्हरे गुण गावैं।  
 ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावै।।**

**रूप सरस्वती को तुम धारा ।  
 दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा।।  
धरा रूप नरसिंह को अम्बा ।  
 परगट भई फाड़कर खम्बा ।।**

**रक्षा करि प्रहलाद बचायो ।  
हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो ।।  
लक्ष्मी रूप धरो जग माही।  
 श्री नारायण अंग समाहीं । ।**

**क्षीरसिंधु मे करत विलासा ।  
 दयासिंधु दीजै मन आसा ।।  
हिंगलाज मे तुम्हीं भवानी।   
 महिमा अमित न जात बखानी ।।**

**मातंगी धूमावति माता।  
 भुवनेश्वरी बगला सुख दाता ।।  
श्री भैरव तारा जग तारिणी।  
 क्षिन्न भाल भव दुःख निवारिणी ।।**

**केहरि वाहन सोहे भवानी।  
 लांगुर वीर चलत अगवानी ।।  
 कर मे खप्पर खड्ग विराजै ।  
 जाको देख काल डर भाजै ।।**

**सोहे अस्त्र और त्रिशूला।  
 जाते उठत शत्रु हिय शूला ।।  
नगर कोटि मे तुमही विराजत।  
 तिहुं लोक में डंका बाजत ।।**

**शुंभ निशुंभ दानव तुम मारे।  
 रक्तबीज शंखन संहारे ।।  
महिषासुर नृप अति अभिमानी।  
 जेहि अधिभार मही अकुलानी ।।**

**रूप कराल काली को धारा।   
 सेन सहित तुम तिहि संहारा।।  
परी गाढ़ संतन पर जब-जब।   
 भई सहाय मात तुम तब-तब ।।**

**अमरपुरी औरों सब लोका।  
 जब महिमा सब रहे अशोका ।।  
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी।  
 तुम्हे सदा पूजें नर नारी ।।**

**प्रेम भक्त से जो जस गावैं।  
 दुःख दारिद्र निकट नहिं आवै ।।  
 ध्यावें जो नर मन लाई ।  
 जन्म मरण ताको छुटि जाई ।।**

**जोगी सुर मुनि कहत पुकारी।  
योग नही बिन शक्ति तुम्हारी ।।  
शंकर आचारज तप कीन्हों ।  
 काम क्रोध जीति सब लीनों ।।**

**निसदिन ध्यान धरो शंकर को।  
 काहु काल नहिं सुमिरो तुमको।।  
शक्ति रूप को मरम न पायो ।  
शक्ति गई तब मन पछितायो।।**

**शरणागत हुई कीर्ति बखानी।  
 जय जय जय जगदम्ब भवानी ।।  
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा ।  
 दई शक्ति नहि कीन्ह विलंबा ।।**

**मोको मातु कष्ट अति घेरों ।  
 तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो ।।  
आशा तृष्णा निपट सतावै।  
 रिपु मूरख मोहि अति डरपावै ।।**

**शत्रु नाश कीजै महारानी।  
 सुमिरौं एकचित तुम्हें भवानी ।।  
करो कृपा हे मातु दयाला।  
 ऋद्धि-सिद्धि दे करहु निहाला ।।**

**जब लगि जियौं दया फल पाऊं।  
 तुम्हरौ जस मै सदा सुनाऊं ।।  
दुर्गा चालीसा जो गावै ।  
 सब सुख भोग परम पद पावै।।**

**देवीदास शरण निज जानी।  
करहु कृपा जगदम्ब भवानी ।।**

**।। दोहा।।**

**शरणागत रक्षा कर, भक्त रहे निःशंक ।   
मैं आया तेरी शरण में, मातु लीजिए अंक।।**

**allbhajan.com**